**15** सितंबर **2024**
पिन्तेकुस्त के बाद **17**वां रविवार
दैनिक जीवन के लिए क्रूस की शिक्षा के पाठ

गिनती अध्याय 11 वचन 16 से लेकर 17 और 24 से लेकर 29 तक
भजन संहिता अध्याय 133
पहला कुरिन्थियों अध्याय **3** वचन **1** से लेकर **9** तक और **18** से लेकर **23** तक
मरकुस अध्याय 9 वचन 30 से लेकर 41 तक

प्रभु यीशु मसीह का क्रूस मसीही विश्वास में न केवल पीड़ा और बलिदान के प्रतीक के रूप में बल्कि दैनिक जीवन के लिए एक गहरे सबक के रूप में केंद्रीय स्थान रखता है। क्रूस के माध्यम से ही हम परमेश्वर के प्रेम की गहराई, हमारे छुटकारे के मूल्य और सच्चे शिष्यत्व के मार्ग को समझते हैं। जब हम पिन्तेकुस्त के बाद इस **17**वें रविवार के लिए ठहराए गए बाइबल के पाठों पर विचार करेंगे, तो हम क्रूस से मिलने वाली शिक्षा के पाठ अर्थात् सबक और वे कैसे हमारे दैनिक विश्वास पर लागू होते हैं, इसका पता लगाएंगे।

**पहला विचार**. **क्रूस हमें नम्रता और परमेश्वर पर निर्भर रहने की शिक्षा देता है (गिनती अध्याय 11 वचन 16 से लेकर 17 और 24 से लेकर 29 तक**)

गिनती की पुस्तक में, हम मूसा को इस्राएलियों का नेतृत्व करने के बोझ से पराजित होते हुए देखते हैं। परमेश्वर मूसा को सत्तर पुरनियों को इकट्ठा करने का निर्देश देता है, ताकि वे उसके साथ बोझ को साझा कर सकें, जो हमें नम्रता और निर्भर रहने के संबंध में एक मूल्यवान सबक सिखाता है। प्रभु यीशु का क्रूस हमें याद दिलाता है कि हम अकेले जीवन के बोझ को नहीं उठा सकते हैं; हमें परमेश्वर की सामर्थ्य और दूसरों से मदद की आवश्यकता है। मूसा, परमेश्वर द्वारा चुने गए एक अगुवे को भी मदद की आवश्यकता से छूट प्राप्त नहीं थी। यह हमें याद दिलाता है कि क्रूस हमें नम्रता के लिए बुलाता है, हमारी सीमाओं और परमेश्वर के अनुग्रह के संबंध में हमारी आवश्यकता को पहचानता है। जिस तरह यीशु ने क्रूस पर मृत्यु के पड़ाव तक स्वयं को नम्र किया था, हमें भी स्वयं को नम्र करना चाहिए, और ईश्वरीय सहायता और विश्वासियों की संगति के संबध में अपनी आवश्यकता को स्वीकार करना चाहिए। यह विनम्रता एक ऐसे जीवन की ओर ले जाती है, जो स्वयं-पर-केंद्रित नहीं बल्कि मसीह-केंद्रित होती है, यह हमारी अपनी समझ के बजाय परमेश्वर की बुद्धि पर निर्भर है।

**दूसरा विचार**. **क्रूस विश्वासियों के बीच एकता के बढ़ावे की शिक्षा देता है (भजन संहिता अध्याय 133**)

भजन अध्याय 133 परमेश्वर के लोगों के बीच एकता की आशीष को बड़े सुन्दर तरीके से चित्रित करता है, इसकी तुलना हारून की दाढ़ी से बहते हुए मूल्यवान तेल या सिय्योन के पहाड़ों पर से पर गिरती हुई हेर्मोन की ओस से की गई है। क्रूस मेल-मिलाप का अंतिम प्रतीक है, जो हमें परमेश्वर और एक-दूसरे के साथ जोड़ता है। यह क्रूस के माध्यम से ही होता है कि विभाजन की दीवारें ढह जाती हैं, जो मसीह की देह में शांति और एकता लाती हैं। क्रूस हमें शिक्षा देता है कि एकता केवल एक अच्छा विचार ही नहीं है, बल्कि एक ईश्वरीय आदेश भी है। यह हमें अपने मतभेदों को दूर करने, एक-दूसरे को क्षमा करने और सामान्य भलाई के लिए मिलकर काम करने के लिए बुलाहट देता है। जिस तरह क्रूस ने हमें परमेश्वर से मिलाया, ठीक उसी तरह यह हमें एक-दूसरे से भी मिलाता है, जिससे हम मसीह में एक

देह बन जाते हैं। एक ऐसे संसार में, जो अक्सर जाति, राजनीति और सामाजिक स्थिति से विभाजित है, क्रूस एक अनुस्मारक के रूप में खड़ा है कि मसीह में, हम सभी एक हैं।

**तीसरा विचार**. क्रूस परमेश्वर के ज्ञान को प्रकट करता है (पहला कुरिन्थियों अध्याय **3** वचन **1** से लेकर **9** और वचन **18** से लेकर **23** तक) कुरिन्थियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस विभाजन के मुद्दे और मसीह के बजाय मानवीय अगुवों का अनुसरण करने के स्वभाव को संबोधित करता है। वह सांसारिक ज्ञान की तुलना परमेश्वर के ज्ञान से करता है, जो क्रूस के द्वारा प्रकट होता है। क्रूस, जो कि संसार के लिए मूर्खता लगता है, वास्तव में परमेश्वर की सामर्थ्य और ज्ञान है। क्रूस हमें शिक्षा देता है कि परमेश्वर के मार्ग हमारे मार्ग नहीं हैं। यह मानवीय तर्क को चुनौती देता है और सामर्थ्य और सफलता की हमारी समझ को चुनौती देता है। जबकि संसार क्रूस को कमजोरी के प्रतीक के रूप में देख सकता है, तथापि यह वास्तव में परमेश्वर की सामर्थ्य का सबसे बड़ा प्रदर्शन है। क्रूस के द्वारा ही, हम परमेश्वर के ज्ञान पर भरोसा करना सीखते हैं, तब भी जब यह हमारी समझ से परे होता है। यह भरोसा हमें हमारी आँखों से देखने के द्वारा नहीं, बल्कि विश्वास से जीने की ओर यह जानते हुए ले जाता है कि परमेश्वर की योजनाएँ हमेशा हमारे भले के लिए होती हैं।

**चौथा विचार**. **क्रूस हमें दूसरों की सेवा करने के लिए बुलाहट देता है (मरकुस अध्याय** 9 **वचन** 30 **से लेकर** 41 **तक**) मरकुस के सुसमाचार में, यीशु अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी करता है, और अपने शिष्यों को 'कौन बड़ा है' के संबंध में सच्चे स्वभाव के बारे में शिक्षा देता है। वह इस बात पर जोर देता है कि परमेश्वर के राज्य में बड़ा होना सामर्थ्य या पद के बारे में नहीं बल्कि दूसरों की सेवा करने के बारे में है। क्रूस बलिदान से भरे प्रेम और सेवा का सर्वोत्तम उदाहरण है। दूसरों के लिए अपना जीवन देने की यीशु की इच्छा हमें उसके पदचिन्हों पर चलने की चुनौती देती है। क्रूस हमें सेवा के जीवन के लिए बुलाता है, जहाँ हम दूसरों की जरूरतों को अपनी जरूरतों से पहले रखते हैं। यह सेवा केवल बड़े इशारों को करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे दया, करुणा और प्रेम के दैनिक कार्यों में भी जीया जाता है। जब हम अपना क्रूस उठाते हैं, तो हमें अपने आस-पास के लोगों की सेवा करने के लिए बुलाया जाता है, जो जरूरतमंद संसार के लिए मसीह के प्रेम को दर्शाता है।

**इस सन्देश का सार:** यीशु मसीह का क्रूस मात्र एक ऐतिहासिक घटना नहीं है; यह एक दैनिक वास्तविकता है, जो कि विश्वासियों के रूप में हमारे जीवन को आकार देती है। यह हमें विनम्रता की शिक्षा देता है, एकता को बढ़ावा देता है, परमेश्वर के ज्ञान को प्रकट करता है, और हमें दूसरों की सेवा करने के लिए बुलाता है। जैसे-जैसे हम क्रूस की शिक्षा को अपनाते चल जाते हैं, वैसे-वैसे हम मसीह के स्वरूप में बदलते चले जाते हैं, और अपने विश्वास को इस तरह से जीते हैं कि परमेश्वर की महिमा हो और दूसरों को आशीष मिले। हमें अपने दैनिक जीवन में क्रूस के महत्व को कभी नहीं भूलना चाहिए। हमें अपने क्रूस को हर्ष के साथ यह जानते हुए उठाना चाहिए कि उसके द्वारा, हम मसीह की समानता में ढलते चले जा रहे हैं। और हमें हमेशा क्रूस को अपने सामर्थ्य, ज्ञान और प्रेम के स्रोत के रूप में देखना चाहिए।

**आइए हम प्रार्थना करें:** हे स्वर्गीय पिता, हम यीशु मसीह के क्रूस के लिए आपका धन्यवाद करते हैं, जो हमें हमारे दैनिक जीवन के लिए बहुत सारे मूल्यवान सबक सिखाता है। हमें विनम्रता से जीने में मदद करें, जिससे कि हम आपकी और एक-दूसरे की जरूरत को पहचानें। हमें मसीह की देह में एकता को बढ़ावा देने, अपने मतभेदों को दूर करने और हमें एक करने वाले प्रेम को अपनाने का अनुग्रह प्रदान करें। हमें हमेशा आपके ज्ञान पर भरोसा रखने,

भले ही यह हमारी समझ से परे हो, और हम अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करते हुए दूसरों की सेवा करने में विश्वासयोग्य बने रहने में मदद करें। हमें अपने क्रूस को प्रतिदिन उठाने के लिए दृढ़ इस आश्वासन के साथ करें कि आपकी सामर्थ्य हमारी कमज़ोरी में सिद्ध होती है। हे प्रभु, हमें सांत्वना और प्रोत्साहन दीजिए, क्योंकि हम विश्वास के इस मार्ग पर चल रहे हैं, और हमें आपके और अधिक निकट ले आएँ। यीशु के नाम में, हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।